ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – अप्रैल 2026 ।। अंक – 57

दो योजनाएँ, एक बदलावः दीदी बनीं आत्मनिर्भरता की नई पहचान

बिहार के ग्रामीण परिदृश्य में आज एक सशक्त बदलाव देखने को मिल रहा है, जहाँ महिलाएँ केवल अपने परिवार तक सीमित नहीं रह गई हैं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की अग्रदूत बनकर उभर रही हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना और मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के समन्वित प्रभाव ने ऐसी हजारों दीदियों को आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया है। ये दीदियाँ अब न केवल अपने परिवार की जिम्मेदारी उठा रही हैं, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बन रही हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना का उद्देश्य अत्यंत निर्धन परिवारों को गरीबी के चक्र से बाहर निकालना है। इस योजना के तहत चयनित दीदियों को विशेष निवेश निधि, जीविकोपार्जन निवेश निधि और जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के माध्यम से आर्थिक सुधार किया जाता है। इसके साथ ही नियमित मार्गदर्शन, सूक्ष्म योजना और सामुदायिक सहयोग उन्हें आत्मनिर्भर बनने की दिशा में सहयोग प्रदान कर रहा है। यह योजना केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं है, बल्कि दीदी के आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता को भी मजबूत करती है।

इसी कड़ी में मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इस योजना के अंतर्गत महिलाओं को स्वरोजगार के लिए प्रत्यक्ष लाभ अंतरण के माध्यम से प्रारंभिक पूंजी प्रदान की गयी है। यह सहायता दीदियों को अपने छोटे–छोटे उद्यम शुरू करने और उन्हें विस्तार देने में मदद कर रही है। जब दोनों योजनाओं का लाभ एक साथ मिलता है, तो दीदी के लिए आत्मनिर्भरता का मार्ग और अधिक प्रशस्त हो जाता है।

इन योजनाओं का वास्तविक प्रभाव तब दिखाई देता है जब एक साधारण ग्रामीण महिला, जो कभी आर्थिक अभाव और सामाजिक असुरक्षा से जूझ रही थी, आज सफल उद्यमी बन रही हैं। पहले जहाँ परिवार की आय सीमित होती थी, वहीं अब जीविका दीदियाँ किराना दुकान, पशुपालन, सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण या अन्य छोटे व्यवसायों के माध्यम से नियमित आय अर्जित कर रही हैं। इससे न केवल परिवार की आर्थिक स्थिति सुधर रही है, बल्कि बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर में भी सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहा है।

सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन दीदी के आत्मविश्वास में दिखाई देता है। जो महिलाएँ पहले निर्णय लेने में संकोच करती थीं, आज वही महिलाएँ अपने व्यवसाय का संचालन कर रही हैं, समूह बैठकों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं और अन्य महिलाओं को भी प्रेरित कर रही हैं। वह अब केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि बदलाव की वाहक बन चुकी हैं।

समुदाय स्तर पर भी इन योजनाओं का व्यापक प्रभाव देखा जा रहा है। गाँवों में अब महिलाओं की भूमिका मजबूत हुई है, सामाजिक सहभागिता बढ़ी है और सामूहिक विकास की भावना को बल मिला है। दीदियाँ अपने अनुभव साझा कर अन्य परिवारों को भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही हैं, जिससे समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है।

इसके अतिरिक्त, इन योजनाओं ने महिलाओं में बचत की आदत, वित्तीय अनुशासन और सामूहिक निर्णय की क्षमता का भी विकास किया है। अब दीदियाँ केवल आय अर्जित करने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अपने उद्यम का विस्तार, बाजार से जुड़ाव और बेहतर उत्पाद गुणवत्ता पर भी ध्यान दे रही हैं। यह बदलाव उन्हें दीर्घकालिक रूप से सशक्त बना रहा है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत अबतक कुल 2,01,218 अत्यंत निर्धन परिवारों को लाभान्वित किया गया है। साथ ही, मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत अपनी पसंद का रोजगार शुरू करने हेतु अबतक कुल 1 करोड़ 81 लाख महिला लाभुकों को 10 हजार रुपये प्रति लाभुक की दर से राशि अंतरित की गयी है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना और मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना का यह समन्वय केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि एक सशक्त सामाजिक परिवर्तन की नींव है। दीदी आज आत्मनिर्भरता की प्रतीक बनकर न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे समाज को एक नई दिशा दे रही हैं। यह परिवर्तन यह सिद्ध करता है कि जब अवसर, संसाधन और सही मार्गदर्शन एक साथ मिलते हैं, तो हर दीदी बदलाव की एक सशक्त कहानी लिख सकती है।

अन्दर के पृष्ठों में...

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने बदली चिंता देवी की जिंदगी
(पृष्ठ – 02)

योजना के सहयोग से सुधा बनी आत्मनिर्भर
(पृष्ठ – 03)

संघर्ष से समृद्धि तक: रेणु देवी की आत्मनिर्भरता और बदलाव की कहानी
(पृष्ठ – 04)

रेणु देवी के संघर्ष और संकल्प की प्रेरक यात्रा

अरवल जिले के करपी प्रखंड स्थित रोहाई पंचायत के रोहाई गाँव निवासी रेणु देवी ने सतत् जीविकोपार्जन योजना के सहयोग से आत्मनिर्भर बनी है। वह गुलाब जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं तथा पायल जीविका महिला ग्राम संगठन और भारत जीविका महिला संकुल संघ का भी सदस्य हैं। वर्ष 2019 में उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत किया गया, जिसने उनके जीवन को नई दिशा प्रदान की।

रेणु देवी का पारिवारिक जीवन पहले अत्यंत कठिन परिस्थितियों से घिरा हुआ था। उनके पति मानसिक रूप से अस्वस्थ थे और किसी प्रकार की आय का स्रोत उपलब्ध नहीं था। परिवार की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय थी। कच्चे मकान में रहने वाला यह परिवार रोजगार के अभाव के बीच जीवन यापन कर रहा था।

स्वयं सहायता समूह और ग्राम संगठन की दीदियों द्वारा उनकी स्थिति को समझते हुए उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत किया गया। योजना के तहत उन्हें श्रृंगार की दुकान की शुरुआत करने हेतु जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत 20,000 रुपये की परिसंपत्ति प्राप्त हुई। धीरे–धीरे इस व्यवसाय से आय होने लगी और जीवन में स्थिरता आने लगी।

आगे चलकर उन्हें दूसरी किस्त के रूप में 54,000 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई, जिससे उन्होंने अपने व्यवसाय का विस्तार किया। इस राशि से उन्होंने दुकान के लिए अतिरिक्त सामान खरीदा तथा एक फोटो कॉपी मशीन भी खरीद कर फोटोस्टेट का कार्य शुरू की। परिणामस्वरूप उनकी मासिक आय बढ़कर 8,000 से 10,000 रुपये तक पहुँच गई।

वर्तमान में रेणु देवी अपने व्यवसाय को संचालित करते हुए अपने पति का इलाज करा रही हैं और बच्चों की शिक्षा पर भी ध्यान दे रही हैं। आज उनका जीवन पहले की तुलना में अधिक सुरक्षित और संतुलित हो गया है।

रेणु देवी अपनी सफलता का श्रेय जीविका स्वयं सहायता समूह एवं ग्राम संगठन के सहयोग के साथ–साथ अपनी मेहनत और दृढ़ संकल्प को देती हैं। उनकी यह यात्रा दर्शाती है कि सही अवसर और सामुदायिक समर्थन मिलने पर महिलाएँ आत्मनिर्भर बन सकती हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने बदली चिंता देवी की जिंदगी

वैशाली जिले के गोरौल प्रखंड की बकसमा पंचायत के रसूलपुर गंगटी गाँव की रहने वाली चिंता देवी आज अपने संघर्ष और हौसले के बल पर आत्मनिर्भरता की राह पर आगे बढ़ रही हैं। गंगा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर उन्होंने न केवल अपने जीवन को बदला, बल्कि अपने परिवार को एक नई दिशा भी दी है।

शादी के बाद उनका जीवन सामान्य रूप से चल रहा था, लेकिन पति की अचानक बिगड़ी तबीयत ने पूरे परिवार को संकट में डाल दिया। इलाज के लिए उन्हें अपने गहने तक बेचने पड़े। परिवार की आर्थिक स्थिति लगातार कमजोर होती गई। आय का कोई स्थायी साधन नहीं था, इसलिए उन्हें मजदूरी करके किसी तरह घर चलाना पड़ता था।

इसी कठिन समय में गाँव में सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत चयन प्रक्रिया शुरू हुई। आसपास की महिलाओं के सहयोग से चिंता देवी ग्राम संगठन की बैठक में शामिल हुईं और योजना से जुड़ने की इच्छा जताई। उनकी स्थिति को देखते हुए ग्राम संगठन द्वारा उनका चयन किया गया।

चयन के बाद उन्हें किराना दुकान शुरू करने हेतु विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये और जीविकोपार्जन निवेश निधि के रूप में 20,000 रुपये की परिसंपत्ति प्राप्त हुई। साथ ही जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में प्रति माह 1000 की दर से सात माह में 7,000 रुपये की सहायता भी मिली।

धीरे–धीरे उनका काम बढ़ने लगा और आय का स्रोत मजबूत हुआ। आज उनकी मासिक आय 8,000 से 10,000 रुपये तक पहुँच गयी है, जिससे परिवार की जरूरतें पूरी हो रही हैं।

अब चिंता देवी का जीवन पहले की तुलना में काफी बदल चुका है। वह आत्मविश्वास के साथ अपने परिवार की जिम्मेदारियाँ निभा रही हैं और अपने बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए प्रयासरत हैं। उनकी यह यात्रा यह बताती है कि सही समय पर मिला सहयोग और मेहनत किसी भी कठिन परिस्थिति को अवसर में बदल सकती है।

योजना के सहयोग से सुधा बनी आत्मनिर्भर

भागलपुर जिले के इस्माईपुर प्रखंड के छोटे से गाँव परबत्ता में रहने वाली सुधा देवी एक साधारण महिला हैं, लेकिन उनकी हिम्मत और मेहनत असाधारण है। उनका परिवार पीढ़ियों से बांस के उत्पाद जैसे सूप और डलिया बनाने का काम करता आ रहा था। लेकिन आर्थिक हालात इतने कमजोर थे कि दो वक्त की रोटी जुटा पाना भी मुश्किल हो जाता था।

सुधा देवी की परिस्थिति को देखते हुए दिसंबर 2021 में उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना से जोड़ा गया। यह योजना विशेष रूप से उन परिवारों के लिए थी, जो शराबबंदी के बाद प्रभावित हुए थे। एकता जीविका महिला ग्राम संगठन ने सुधा दीदी को आगे बढ़ने का मौका दिया और योजना का हिस्सा बनाकर उनका हौसला बढ़ाया।

इस योजना के तहत गीता देवी को न केवल प्रशिक्षण मिला, बल्कि उन्हें आर्थिक मदद भी दी गई। योजना के तहत इन्हें 10,000 रुपये की विशेष निवेश निधि, 20,000 रुपये की जीविकोपार्जन निवेश निधि और 1,000 रुपये प्रति माह की सहायता सात महीनों तक दी गई। सरकार की सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिली पूंजी ने गीता देवी की दुनिया ही बदल दी। उन्होंने न केवल सूप–डलिया का काम फिर से शुरू किया, बल्कि उसे एक नया रूप और पहचान दी।

आज सुधा देवी रंग–बिरंगे सुंदर सूप और डलिया बनाती हैं, जिन्हें स्थानीय हाट–बाजारों में बेचती हैं। इसके अलावा वह बांस से सजावटी वस्तुएँ भी बनाती और बिक्री करती हैं जिससे उन्हें 6,000 से 8,000 रुपये तक की आमदनी कर रही है।

कभी जो महिला अपने परिवार के लिए दो वक्त की रोटी के लिए जूझती थी, वह आज आत्मनिर्भर बन चुकी हैं। सुधा देवी की कहानी यह बताती है कि अगर किसी के भीतर मेहनत करने की लगन हो और साथ में सही मार्गदर्शन और सहयोग मिल जाए, तो कोई भी महिला अपनी जिंदगी बदल सकती है।

जिम्मेदारी से अवसर तक की यात्रा

बक्सर जिले के चक्की प्रखंड की चक्की पंचायत के चक्की गाँव में रहने वाली ललिता देवी की जीवन यात्रा संघर्ष का उदाहरण है। पति के निधन के बाद परिवार की पूरी जिम्मेदारी उनके ऊपर आ गई। सीमित संसाधनों के बीच छह सदस्यों के परिवार का भरण–पोषण करना उनके लिए अत्यंत कठिन था। उस समय उनकी मासिक आय लगभग 3,000 रुपये थी, जिससे घर का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा था।

परिस्थितियों से जूझते हुए ललिता देवी को स्वयं सहायता समूह से जुड़ने का अवसर मिला, जिसने उनके जीवन में बदलाव की शुरुआत की। स्वयं सहायता समूह की बैठकों में शामिल होकर उन्होंने बचत, ऋण और वित्तीय प्रबंधन के बारे में सीखा। समूह के सहयोग से उन्होंने सिलाई का प्रशिक्षण प्राप्त किया और एक सिलाई मशीन खरीदकर घर से ही काम शुरू किया।

इसी दौरान उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत चयनित किया गया। जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत प्राप्त परिसंपत्ति से उन्होंने एक छोटा किराना दुकान भी शुरू की।

आज ललिता देवी सिलाई कार्य और किराना दुकान के माध्यम से 7,000 से 8,000 रुपये प्रतिमाह की कमाई कर रही हैं। इससे न केवल उनके परिवार की जरूरतें पूरी हो रही हैं, बल्कि बच्चों की पढ़ाई भी पहले से बेहतर ढंग से चल रही है। घर की स्थिति में सुधार आया है और जीवन में भी स्थिरता आई है।

अब ललिता देवी पहले की तुलना में अधिक आत्मविश्वासी हो गई हैं। वह अपने अनुभवों के आधार पर अन्य महिलाओं को भी समूह से जुड़कर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं। उनकी यह यात्रा दर्शाती है कि कठिन परिस्थितियों में भी यदि सही दिशा और सहयोग मिले, तो एक महिला अपने जीवन को बदल सकती है और आत्मनिर्भर बन सकती है।

संघर्ष से समृद्धि तक:

रेणु देवी की आत्मनिर्भरता और बदलाव की कहानी

मुजफ्फरपुर जिले के सकरा प्रखंड अंतर्गत रामपुर कृष्ण पंचायत के रेपुरा गाँव की निवासी रेणु देवी आज महिला सशक्तीकरण और आत्मनिर्भरता की एक मजबूत पहचान बनकर उभरी हैं। वह वैष्णो जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं। वर्ष 2020 में उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत किया गया, जिसने उनके जीवन को नई दिशा दी।

रेणु देवी का पारिवारिक जीवन पहले बेहद कठिन परिस्थितियों से घिरा हुआ था। उनके पति शराब के व्यवसाय से जुड़े थे और अत्यधिक शराब पीने के कारण परिवार की आर्थिक व सामाजिक स्थिति कमजोर होती जा रही थी। घर में अशांति का माहौल रहता था और बच्चों की पढ़ाई भी प्रभावित हो रही थी। आय का कोई स्थायी साधन नहीं था, जिससे परिवार अभाव और असुरक्षा के बीच जीवन यापन कर रहा था।

सामुदायिक संसाधन सवियों द्वारा सर्वेक्षण के दौरान उनकी स्थिति को चिन्हित किया गया। मैना ग्राम संगठन में सत्यापन के बाद उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत किया गया। मास्टर संसाधन सेवी के माध्यम से उनका सूक्ष्म नियोजन (माइक्रो प्लान) तैयार हुआ और उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये, जीविकोपार्जन निवेश निधि के रूप में 20,000 रुपये की परिसंपत्ति तथा जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में कुल 7,000 रुपये (प्रति माह 1000 रुपये की दर से) प्रदान किए गए।

ग्राम संगठन के सहयोग से उन्होंने जीविकोपार्जन निवेश निधि की राशि से श्रृंगार दुकान शुरू की और साथ ही किराना दुकान भी खोली। जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि से प्रारंभिक खर्चों को संभालने में मदद मिली, जिससे व्यवसाय की पूंजी सुरक्षित रही। विशेष निवेश निधि ने उनके आर्थिक आधार को मजबूत किया। धीरे–धीरे दुकान से आय होने लगी और परिवार की स्थिति सुधरने लगी।

बचत और मेहनत के बल पर और जीविकोपार्जन निवेश निधि की दूसरी किस्त से उन्होंने एक गाय खरीदी। इससे प्रतिदिन लगभग 10 लीटर दूध मिलने लगा, जिससे आय में और वृद्धि हुई।

आज रेणु देवी 15 कट्ठा जमीन बटाई पर लेकर खेती कर रही है। उनके पति अब चेन्नई में काम करते हैं और हर महीने लगभग 12,000 रुपये घर भेजते हैं।

उनके तीन बच्चे हैं, एक बेटी और दो बेटे, जो अब नियमित रूप से पढ़ाई कर रहे हैं। परिवार का माहौल अब पहले की तुलना में सुरक्षित है।

रेणु देवी अपनी सफलता का श्रेय सतत् जीविकोपार्जन योजना, ग्राम संगठन और अपनी मेहनत को देती हैं। उनकी सक्रिय भागीदारी समूह बैठकों में बनी रहती है और वह नई जीविकोपार्जन गतिविधियों के लिए अन्य दीदियों को भी प्रोत्साहित करती हैं। आज वह न केवल अपने परिवार की स्थिति मजबूत कर चुकी हैं, बल्कि गाँव की अन्य महिलाओं को भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही हैं। उनकी कहानी यह दिखाती है कि सही अवसर और सहयोग मिलने पर महिलाएं आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार का भविष्य बदल सकती हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार